हाशिए का स्वर
और
आधुनिक हिन्दी साहित्य

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
19–20 मार्च, 2015

संगोष्ठी निदेशक
डॉ. प्रभा वर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
मो. 9772930720

आयोजन सचिव
डॉ. विनोद शर्मा
हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
मो. 9950997599,7597530500

आयोजक
हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004
फोन. 0141–2711070–2404

हाशिए का स्वर और आधुनिक हिन्दी साहित्य

भारत जैसे बहुलतावादी देश की कुल जनसंख्या का बड़ा भाग विकास के तमाम दावों के बावजूद हाशिए पर है। सोचने वाली बात है कि हमारे देश की तीन–चौथाई से भी अधिक जनता हाशिए पर कैसे हो सकती है?क्या हाशिया 'पेज' से भी बड़ा होता है? आँकड़े बताते हैं कि भारत में 15 प्रतिशत से भी कम संख्या वाले अभिजात वर्ग के पास पूरे देश के भाग्य का निर्णय करने की शक्ति है। देश के प्रमुख संसाधनों पर उनका कब्जा है और राजनीतिक सत्ता एवं शक्ति के प्रायः सभी प्रतिष्ठान उनके हाथों की कठपुतली है। जबकि इन मुट्ठी भर लोगों के बरअक्स सामाजिक ताने–बाने में सदैव उपेक्षित एवं समाज की मुख्यधारा बनाते लोग न केवल अधिकारों के वृत्त के बाहरी छोर या हाशिए पर हैं बल्कि विकास के लाभों से वंचित और बहुधा विकास की कीमत चुकाते हैं।

'हाशिए का समाज' अवधारणा के तौर पर इतालवी मार्क्सवादी विचारक अंतोनियो ग्राम्शी द्वारा प्रयुक्त 'सबाल्टर्न' से आया है। ग्राम्शी के अनुसार 'सबाल्टर्न' में दुनिया के सभी वंचित, दलित, पीड़ित शामिल हो सकते हैं जो किसी न किसी तरह के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, नस्लीय, सांस्कृतिक भेदभाव अथवा वंचना के शिकार रहे हैं। महत्त्वपूर्ण है कि उत्तर आधुनिक समय में छोटे–छोटे अस्मिता समूहों के उदय के फलस्वरूप आज हाशिए के लोगों की आवाज राजनीति और साहित्य हर कहीं सुनी जा रही है।

इतिहास गवाह है कि भारत की तीन बड़ी क्रांतियाँ– बौद्ध धर्म का उदय, भक्ति आंदोलन और स्वाधीनता आंदोलन– हाशिए के लोगों द्वारा अपने अधिकारों तथा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक महत्ता प्राप्त करने के लिए संघर्ष से संबद्ध रहीं जिनमें समाज के दलित–वंचित वर्गों, महिलाओं, आदिवासियो और अल्पसंख्यकों ने बढ़– चढ़ कर हिस्सा लिया। ये क्रांतियाँ निस्संदेह समाज के वंचित तबके के लोगों की हिस्सेदारी से ही संभव हुईं। इन

क्रांतियों की अनुगूंज तत्कालीन साहित्य में अत्यंत सफल एवं सशक्त ढंग से बराबर सुनायी देती है।

प्राचीन काल में संस्कृत की आभिजात्य साहित्य परंपरा के बरअक्स प्राकृत–पालि जैसी जनभाषाओं में रचित काव्य, भक्तिकाल में दलित–वंचित वर्गों से आए संतों, स्त्रियों और अल्पसंख्यकों की रचनाएं और स्वाधीनता आंदोलन काल (19–20 वीं शती) में रचा गया साहित्य इसका प्रमाण है। आधुनिक काल का हिन्दी साहित्य इन्हीं बीज स्रोतों से आधार, प्रेरणा एवं प्रभाव लेकर आगे बढ़ता है जहां हाशिए की अस्मिताएं पूरी शिद्दत से अपनी मौजूदगी दर्ज कराती हैं।

'हाशिए का समाज' की अवधारणा ने हिन्दी में कई साहित्यिक विमर्शों को जन्म दिया है। हजारों वर्षों के शोषण एवं भेदभाव के विरुद्ध इनके संघर्ष का परिणाम है कि आजादी के बाद इन पर विशेष ध्यान दिया गया। आज की जरूरत इन्हें प्रदत्त विधिक अधिकारों की मूल भावना को समाज के यथार्थ में परिवर्तित करना है। इन विमर्शों की यह सबसे बड़ी सामाजिक उपयोगिता है जिसके चलते वर्तमान साहित्यिक परिदृश्य में ये विमर्श हाशिए पर नहीं, वरन् केन्द्रीय स्थान रखते हैं। हिन्दी में महात्मा ज्योतिबा फुले और बाबा साहब अम्बेडकर के विचारों एवं संघर्ष से आंदोलित दलित लेखन एवं पश्चिमी नारीवाद की छाया में विकसित स्त्री विमर्श से प्रभावित महिला लेखन का उत्कृष्ट रूप हमारे सामने है। आदिवासियों के जीवन का मूलाधार वन क्षेत्रों में नवपूंजीवादी ताकतों के साम्राज्य विस्तार एवं संसाधनों की खुली लूट के कारण उपजे गंभीर विमर्श से जन्मा आदिवासी लेखन इस दिशा में नया प्रस्थान है। हाशिए के समाज में अब किसान–मजदूर, अल्पसंख्यक, वृद्ध, निःशक्तजन, किन्नर आदि भी सम्मिलित हैं। उल्लेखनीय है कि इनसे संबंधित विमर्श न केवल साहित्यकी प्रायः सभी विधाओं को समृद्ध करते हैं बल्कि रचना– आलोचना के परंपरागत प्रतिमानों से

अलग साहित्य के नये सौंदर्यशास्त्र की वकालत भी करते हैं।

इस संगोष्ठी का मुख्य लक्ष्य आधुनिक हिन्दी साहित्य में 'हाशिए का समाज' के विभिन्न स्वरों की तलाश एवं उन पर विस्तृत विमर्श कर केन्द्र में उन्हें स्थापित करने की कोशिश है।

प्रस्तावित विषय

- हाशिए का समाज : अवधारणा
- हाशिए का समाज : समस्याएं व संघर्ष
- हाशिए के विमर्श और साहित्य की जमीन
- हाशिए का साहित्य और साहित्य की राजनीति
- दलित अस्मिता का स्वर और साहित्य
- स्त्री अस्मिता का स्वर और साहित्य
- आदिवासी चेतना का स्वर और साहित्य
- किसान, श्रमिक वर्ग और साहित्य
- साहित्य और अल्पसंख्यक समुदाय
- विस्थापित होते लोग और साहित्य
- साहित्य में वृद्ध, निःशक्तजन एवं किन्नर समाज के स्वर
- साहित्य की विभिन्न विधाओं में हाशिए का स्वर

पंजीयन प्रपत्र

नाम.....

पद .....

संस्था .....

.....

.....

शोधपत्र का शीर्षक.....

.....

पंजीयन शुल्क

शिक्षक – 800 रू. शोध छात्र व अन्य – 500 रू.
नोट : प्रतिभागी अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं करें।

परामर्श

प्रो. अनिल कुमार जैन
प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय

स्वागत समिति

डॉ. करतार सिंह	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. रेणु व्यास
डॉ. जगदीश गिरी	डॉ. मंदाकिनी मीणा
डॉ. गीता सामौर	डॉ. वीरेन्द्र सिंह
डॉ. अर्जुन सिंह	कैलाश पंवार
विशाल विक्रम सिंह	श्रुति शर्मा
अनिता रानी	तारावती मीणा
सुंदरम शांडिल्य	वर्षा वर्मा

बुक–पोस्ट

हाशिए का स्वर और आधुनिक हिन्दी साहित्य

दो दिवसीय संगोष्ठी

दिनांक : 19–20 मार्च, 2015

प्रति,

.....

.....

.....

प्रेषक :

डॉ. प्रभा वर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
निदेशक, राष्ट्रीय संगोष्ठी
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–302004
मो.–9772930720, ईमेल : prabha21855@gmail.com